मेहनतकशों का पैग़ाम

मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2018-20 /R.N.I. No. 66400/97

भाजपा नेता के शोरूम पर चला पीला पंजा 3
हूडा फरीदाबाद में मूर्तियों का बसेरा 4
घोटालेबाज को चीफ इंजीनियर बनाने की तैयारी 5
पुलिस के छद्म से उलझता किसान आन्दोलन 6
सेक्टर-74 से डम्पिंग साइट हटाने का निर्देश 8

वर्ष 34 | अंक 16 | फरीदाबाद | 28 फरवरी-6 मार्च 2021 | फोन-8851091460 | 3.00 ₹

जज धर्मेन्द्र राणा ने दिखा दिया, अभी चल रही हैं न्यायपालिका की सांसें

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली की पटियाला हाउस अदालत के अतिरिक्त सेशन जज धर्मेन्द्र राणा ने 23 फरवरी को दिशा रवि की जमानत मंजूर करके यह सिद्ध कर दिया है कि न्यायपालिका अभी पूरी तरह से मरी नहीं है, उसकी सांसें अभी चल रही हैं। अभी कुछ ईमानदार और दिलेर जज मौजूद हैं।

उनके उक्त फैसले को लेकर देश-विदेश में उनकी खूब वाहवाही हो रही है, जबकि यह कोई इतना बड़ा कारनामा नहीं था। जमानत देना और न देना किसी भी अदालत का रोजमर्रा का काम है, फिर इसमें इतनी वाहवाही की कौन सी बात है ?

दरअसल उक्त फैसला 'हम दो और हमारे दो' की सरकार के जख्मों पर नमक मसलने जैसा है। बीते कई वर्षो से यह सरकार उन सब जागरूक एवं संघर्षरत लोगों को झूठे एवं बेबुनियाद केसों में लपेट कर जेलों में ठूंसे जा रही है जो उनके देश विरोधी कार्यों पर सवाल खड़े करते हैं। भीमाकोरेगांव मामले में दर्जनों लेखक, कवि, वकील, प्रोफेसर आदि वर्षो से जेल में पड़े हैं जबकि इनके विरूद्ध अभी तक कोई आरोप सिद्ध नहीं हुआ है, बल्कि यह सिद्ध हो चुका है कि उनको एनआईए पुलिस ने किस तरह से झूठे केस में लपेटा हुआ है। इसके बावजूद किसी अदालत की हिम्मत नहीं कि उन्हें रिहा कर दे।

यूपी में सीएम अजय सिंह बिष्ट तो ऐसे मदमस्त विचर रहे हैं कि वहां न्यायपालिका उनकी मनमानी के आगे पूरी तरह से दम तोड़ चुकी है।

डा. कफील के निर्दोष होने के बावजूद वहां की सरकार जब चाहे उन्हें जेल में डाल देती है और अदालतों की हिम्मत नहीं होती कि सरकार को नाराज कर सकें। गिरफ्तारी को लेकर सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइनों की पुलिस हर रोज धज्जियां उड़ा रही है और अदालतें तमाशाई बनी देख रही हैं।

नोएडा से एक पत्रकार को उठाकर पुलिस लखनऊ ले गयी तो सुप्रीम कोर्ट ने उसकी बेल मंजूर करके बड़ा एहसान कर दिया लेकिन कानून से खिलवाड़ करने वाली पुलिस को पूछा तक नहीं। इसी तरह पिछले दिनों सिंघू बार्डर से पत्रकार मनदीप पुनिया को जिस तरह पुलिस घसीट कर ले गयी, उस पर अदालत ने कोई सवाल नहीं उठाया, बस उनकी जमानत लेकर महान हो गयी। यही सब लगातार बड़े पैमाने पर हो रहा है।

जज साहब गरजे तो बहुत, बरसे कम

जज धर्मेन्द्र राणा ने अपना 18 पृष्ठ का फैसला देकर जिस तरह से सरकार को लताड़ा व अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता बताते हुए दिशा की जमानत मंजूर की तो राणा साहब एकदम राष्ट्रीय हीरो हो गये। लेकिन यहां उन पर भी सवाल उठते हैं। दिशा को बेकसूर समझने में जज साहब को पूरा सप्ताह लग गया। शुक्रवार को बहस पूरी होने के बाद मंगलवार तक वे चुप्पी साधे रहे। सारी बात समझने के बावजूद उन्होंने दिशा को जमानत पर छोड़ने की बजाये डिस्चार्ज और पुलिस के विरूद्ध चार्ज क्यों नहीं लगाया ? इतना ही नहीं जमानती मुचलका भी पूरे एक लाख का भरवाया, क्यो ?

दरअसल, सर्वविदित है कि पुलिस इस तरह के झूठे मुकदमे अपने हाकिमों के आदेश पर ही दर्ज करते हैं जिनके विरूद्ध अदालतें कोई भी कार्यवाही करने में इसलिये असमर्थ होती हैं कि वे सीधे तौर पर सामने नहीं आते, हां यदि अदालतें सीधे तौर पर सामने आने वाले पुलिस अधिकारियों पर शिकंजा कसने लगें तो पुलिस वाले खुद-ब-खुद पीछे हटने लगेंगे। जाहिर है अदालतों के ऐसा करने पर एक तो पुलिस वाले झूठे केस बनाना बंद कर देंगे और दूसरे अदालतों से मुकदमों का बोझ भी घटने लगेगा। आज अदालतों की भूमिका पुलिस के काले कारनामों को कानूनी कवर प्रदान करने भर की बन कर रह गयी है।

फरीदाबाद के कांग्रेसियों ने दिखाया दम-खम, लेकिन कई प्रमुख नेता रैली से गायब रहे

केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर के घर के सामने से नारेबाजी करता निकला जुलूस

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: कांग्रेस पार्टी ने फरीदाबाद में 24 फरवरी को महंगाई और तीन कृषि कानूनों के खिलाफ प्रदर्शन कर अपने दमखम का परिचय दिया लेकिन कांग्रेस का यह शो फिर भी कांग्रेसियों को एकजुट नहीं कर सका। हालांकि कांग्रेसियों ने सूझबूझ दिखाते हुए इसकी शुरुआत सेक्टर 28 की मार्केट से की, जहां केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर का निवास है। उनके घर के सामने से प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री खट्टर के खिलाफ नारेबाजी करते हुए निकलना एक रणनीतिक पहल थी। इस प्रदर्शन से उन कांग्रेस कार्यकर्ताओं का डर निकालने की कोशिश की गई जो भाजपा और उसके नेताओं के आतंक की वजह से घरों में बैठ गए।

क्यों बंट जाती है कांग्रेस

फरीदाबाद के कांग्रेसियों ने लंबे समय के बाद इस तरह का प्रदर्शन आयोजित किया, जिसमें फरीदाबाद भाजपा में सबसे मजबूत कृष्णपाल गुर्जर लॉबी को सीधे चुनौती दी गई। इसका नेतृत्व हरियाणा के कांग्रेस प्रभारी विवेक बंसल और पूर्व मंत्री महेन्द्र प्रताप सिंह के बेटे विजय प्रताप ने किया। उनके अलावा इस प्रदर्शन में विधायक नीरज शर्मा, प्रदेश प्रवक्ता योगेश धींगड़ा, पूर्व विधायक राजेन्द्र सिंह बीसला, गफ्फार कुरैशी समेत कई सीनियर नेता और कार्यकर्ता उपस्थित थे। एक तरह से इस रैली में वो सारे लोग शामिल थे जो प्रदेश अध्यक्ष कुमारी शैलजा के नेतृत्व में विश्वास रखते हैं लेकिन भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के कट्टर समर्थक इस रैली से दूर रहे, हालांकि यह पार्टी का प्रोग्राम था। गैर हाजिर लोगों में पूर्व विधायक ललित नागर और लखन सिंगला प्रमुख हैं। यह रैली उस सड़क से भी गुजरी जहां सिंगला के परिवार के लोग अपने पुश्तैनी बिजनेस में लगे हुए हैं लेकिन वैश्य समुदाय की बहुलता वाले ओल्ड फरीदाबाद इलाके में प्रदर्शन के दौरान लखन सिंगला का गायब होना पार्टी की अंदरुनी स्थिति बताने के लिए काफी है। इसी तरह भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के समर्थक कार्यकर्ता भी इस रैली से किनारा किए रहे।

कई दलों से कांग्रेस में वापस लौटे अवतार सिंह भड़ाना भी इस रैली से गायब रहे, हालांकि हाल ही में उन्हें किसानों के प्रदर्शन के दौरान काफी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हुए देखा गया था। पिछले लोकसभा चुनाव में कृष्णपाल गुर्जर ने अवतार भड़ाना को ही हराया था। अब गुर्जर को सीधे चुनौती देने वाली इस रैली से भड़ाना के गायब होने को उनके महेन्द्र प्रताप सिंह से पुराने मनमुटाव से जोड़ा जा सकता है। अवतार और महेन्द्र प्रताप का हमेशा 36 का आंकड़ा रहा है।

आम लोग भी दिखे

फरीदाबाद कांग्रेस के लिए यह संतोष की बात हो सकती है कि इसमें पहली बार आम लोग भी दिखे। प्रदर्शन में करीब एक हजार लोग थे और यह कांग्रेस का पहला प्रदर्शन था जिसमें आम जनता की

सहभागिता दिखाई दी। सेक्टर 28 में जहां से यह रैली शुरू हुई, वहां के स्थानीय निवासी जो अक्सर भाजपा खेमे में देखे जाते थे, वे रैली में खड़े नजर आए और उन्होंने रैली में कुछ दूर पैदल चलकर इसका सांकेतिक समर्थन किया। इसी तरह ओल्ड फरीदाबाद में भी काफी दुकानदार अपनी दुकानों से निकलकर रैली में शामिल हुए और कुछ दूर तक चले। मार्केट में खरीदारी करते लोगों में इस प्रदर्शन को लेकर सुखद प्रतिक्रिया देखी गई। आमतौर पर ऐसी रैलियों में पार्टी के कार्यकर्ता या नेताओं के अनुयायी ही नजर आते हैं। रैली की वजह से ओल्ड फरीदाबाद मार्केट में काफी देर के लिए ट्रैफिक जाम की समस्या रही।

इस रैली की वजह से मंत्री कृष्णपाल गुर्जर के घर के आसपास कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई थी। कांग्रेस ने अपनी रैली की घोषणा पहले से कर रखी थी और आशंका थी कि केंद्रीय मंत्री के समर्थक उनके घर और दफ्तर के सामने नारेबाजी होने पर विरोध करेंगे लेकिन इस संभावित टकराव को खुद मंत्री गुर्जर ने ही टाल दिया। उनके समर्थकों की ओर कोई प्रतिक्रिया नहीं होने पर कांग्रेस कार्यकर्ता नारे लगाते हुए आगे निकल गए।

इस प्रदर्शन के जरिए कांग्रेस को इतना अंदाजा तो हो ही गया कि अगर पार्टी जनता से जुड़े मुद्दों को लेकर सड़क पर उतरती है तो उसे जनसमर्थन जरूर मिलेगा। लोग महंगाई से तंग चल ही रहे हैं।